बिहार सरकार

# पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग
## (पशुपालन)

# अपने पशुओं को खुरहा एवं मुँहपका रोग से बचाएँ

### परिचय

यह बीमारी पागुर (जुगाली) करने वाले पशुओं अर्थात् गाय, भैंस, बैल, बाछा–बाछी, पाड़ा–पाड़ी एवं सूकरों को प्रभावित करती है जो एक छूतही बीमारी है। इस रोग से मरने वाले पशुओं की संख्या नगण्य होती है। परन्तु इस रोग से प्रभावित पशु की कार्य क्षमता एवं उत्पादन क्षमता अत्यधिक प्रभावित होती है।

### रोग के कारण

यह रोग वायरस यानि विषाणु से होता है। इसके कई प्रकार होते हैं। एक प्रकार के विषाणु के द्वारा फैलाए गए रोग से स्वस्थ हो जाने पर भी पशु को दूसरे प्रकार के विषाणु दुबारा बीमार बना सकते हैं। यह विषाणु पानी, घास, चारागाह, रोगी पशु की देखभाल करने वालों के कपड़े, जूते आदि के सहारे पशु तक पहुंच जाते हैं तथा पशु के मुँह, जीभ, खुर या शरीर पर लगी चोट, खरोंच या पशु की लार आदि के माध्यम से शरीर में यह रोग पैदा करते हैं।

### रोग के लक्षण

- पशु कांपता है एवं उसे तेज बुखार हो जाता है। शुरू में बुखार 107°–108°F तक हो जाता है।
- मुँह, सींग आदि छूने पर गर्म लगते हैं। मुँह से लार गिरता है।
- मुँह के अन्दर जीभ, मसूढ़ों और कल्लों में फफोले निकल आते हैं जो बाद में फूट जाते हैं।
- खूंर में भी छोटे–छोटे फफोले निकल जाते हैं। ये फफोले फूट जाते हैं और पशु लंगड़ाने लगता है। कभी कभार गाय के थन पर भी फफोले निकल जाते हैं।
- पशु हांफने लगता है। खाने में परेशानी होती है।
- पशु के मुँह से धागे की तरह लार बहने लगता है।
- पशु कमजोर हो जाता है और उसकी उत्पादकता काफी कम हो जाती है।

### रोग से बचाव

लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। इस रोग से बचाव हेतु टीकाकरण कराना चाहिए। पहला टीकाकरण 03–04 माह की उम्र में एवं तत्पश्चात् वर्ष में दो बार 6 माह के अंतराल पर टीकाकरण कराना चाहिए।

### सामान्य सुझाव

पशुओं के रहने का स्थान साफ–सुथरा होना चाहिए। बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखा जाना चाहिए। बीमार पशुओं का जूठन भी स्वस्थ पशु को नहीं खिलाना चाहिए।

### उपचार

मुँह के छालों को दो प्रतिशत फिटकरी के घोल से धोकर साफ रखें तथा एक प्रतिशत बोरो ग्लीसरीन लगायें। पैर के छालों को एक प्रतिशत कॉपर सल्फेट या फिनाइल के घोल से प्रत्येक दिन धोया जाए और मक्खियों से बचाया जाए। पैर के छालों पर मलहम का उपयोग भी करना चाहिए। नीम या तुलसी का पत्ता पीसकर लगाया जा सकता है। पशु को कुछ देर के लिए फुट बाथ के लिए खड़ा किया जाए। एफ0एम0डी0 ट्रफ में पानी के साथ दो प्रतिशत फिनाइल या नीला थोथा मिलाना चाहिए।

**नोट :- इस रोग से बचाव हेतु विभाग के द्वारा पशु स्वास्थ्य एवं रक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत घर-घर जाकर दिनांक 14.11.2017 से दिनांक 28.11.2017 तक निःशुल्क टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है।**

पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित